ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

लोक कला में रामकथा

KEY WORDS:

डॉ0 नीलम सिंह सहायक प्रवक्ता, हिंदी सी.आर.एम.जाट महाविद्यालय हिसार

शोध–आलेख–सार

रामायण आदि कवि वाल्मीकि द्वारा लिखा गया संस्कृत का एक अनुपम महाकाव्य है। यह हिन्दु स्मृति का वह अंग है जिसके माध्यम से रघुवंश के राजा राम की गाथा कही गयी। इसे आदि का काव्य भी कहा जाता है। रामायण के सात अध्याय है जो काण्ड के नाम से जाने जाते है। महर्षि वाल्मीकि के द्वारा श्लोकबद्ध भगवान श्री राम की कथा को वाल्मीकि रामायण के नाम से जाना जाता है तथा वाल्मीकि के आदिकवि कहा जाता है तथा वाल्मीकि रामायण को आदि रामायण के नाम से भी जाना जाता है।

भिन्न–भिन्न प्रकार से गिनने पर रामायण तीन सौ से लेकए एक हजार तक की संख्या में विविध रूपों में मिलता है। इनमें से संस्कृत में रचित वाल्मीकि रामायण सबसे प्राचीन माना जाता है रामकथा के विभिन्न रूप विभिन्न देशों और विभिन्न भाषाओं के साहित्यों में पाए जाते है। लोक कला में भी रामायण का स्थान अपने आप मे अहम भूमिका रखता है। जिसकी रचना लोक करता है। लोक का अभिप्राय उस कला से है जिसकी रचना लोक करता है। लोक साहित्य उतना ही प्राचीन है जितना कि मानव, इसलिए उसमें जन जीवन की प्रत्येक अवस्था, प्रत्येक वर्ग प्रत्येक समय और प्रकृति सभी कुछ समाहित है। लोक जीवन की जैसी सरलतम, नैसर्गिक अनुभूतिमयी अभिव्यंजना का चित्रण लोक गीतों व लोक कथाओं में मिलता है वैसा अन्यत्र सर्वथा दुर्लभ है। लोक साहित्य में लोक मानव का हृदय बोलता है। प्रकृति स्वयं गाती–गुनगुनाती है। लोक साहित्य में निहित सौंदर्य का मूल्यांकन सर्वथा अनुभूतिजन्य है।

हरियाणा में रामायण –रामायण (रामलीला) का प्रारम्भ सर्वप्रथम ''मेधाभक्त तथा गोस्वामी तुलसीदास ने किया'' इनके निर्देशन में काशी की रामलीला सर्वाधिक लोकप्रिय हो कर सारे उत्तर प्रदेश में अभिनीत होने लगी। डॉ0 पूर्णचंद शर्मा ने हरियाणा की सांस्कृतिक सीमाओं का अंकन करते हुए लिखा है कि, ''दिल्ली तो हरियाणा में समाविष्ट है ही, उत्तर प्रदेश का मेरठ डिवीजन भी हरियाणवी संस्कृति का अभिन्न अंग है। अतः प्रचलित रामलीला (रामायण) का प्राकट्य चाहे पहले–पहले उत्तर प्रदेश में हुआ हो, पर इसके साथ ही हरियाणा में भी इसके प्रदर्शनों का होना स्वाभाविक ही था। भक्तिकाल प्रसूत इस लीला के प्रदर्शन हरियाणा के गांवों और नगरों में समान रूप से लोकप्रिय हो गए थे तथा पारसी कम्पनियों के आगमन से पूर्व रामलीला (रामायाण) के ये प्रदर्शन बहुत ही सात्विक एवं भक्तिभाव से परिपूर्ण होते थे।

रामकथा कभी निर्माता की कृति मात्र रही होगी, किन्तु आज वह कोटि–कोटि नर–नारियों के घर–घर की वस्तु है। ''रामायण'' अपने मूल रूप में संस्कृत साहित्य का आदि महाकाव्य और कतिपय परवर्ती महाकाव्यों का प्रेरणास्त्रोत है। ''रामायण'' की प्रधानता यही है कि उसमें घर–घर की बातों का समावेश है। पिता–पुत्र में भाई–भाई में, स्वामी–स्वामी में जो धर्मबन्धन है, जो प्रीति और भक्ति का सम्बंध है, 'उसको 'रामायण' ने इतना महान बना दिया है कि वह सहज में महाकाव्य के लिए उपयुक्त हो गया है।

वाल्मीकि रामायण का महत्व आज भी है और भविष्य में भी रहेगा। सच्चे साहित्य में भविष्य निर्माण की क्षमता होती है, वह रामायण में है। रामायण इस कसौटी पर खरा उतरता है। उसमें आने वाली पीढ़ियों को राह दिखाने की क्षमता है। उसमें उदारता, धर्मसम्मत अर्थ और काम शरणागत तथा पीड़ित का रक्षण, मानव की श्रेष्ठता, मित्रता, आज्ञा पालन, व्रतनिष्ठा, मधुर तथा संयत्र भाषण आदि रामायण को निःसंदेह एक अमर महाकाव्य बनाती है।[3]

रामायण की मूल कथा जहाँ एक और कई स्तरों पर आदर्श जीवन का परिभाषित करती रही है, वहीं दूसरी और इसमें मानवीय संबंधों व अच्छाई–बुराई के संघर्ष के ढेरों रोचक प्रसंग है, जो बच्चों से बुछो तक सभी आकर्षित करते है। हमारे देश के सामाजिक ताने–बाने का एक व्यवस्थित रूप देने में इस अद्भुत कथा की एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आम लोगों के बीच रामकथा बुराई के खिलाफ अच्छाई के संघर्ष और विभिन्न मानवीय संबधों की गरिमा और गहरी संवेदना के रूप में ही प्रतिष्ठित हुई है। यह एक तरह का सांस्कृतिक दस्तावेज है। सुखद आश्चर्य की बात तो यह है कि इतने बरसों में भी इसके आकर्षण में जरा भी कमी नहीं आई है। इस महाकाव्य की मूल भावना का आकर्शण और प्रभाव कितना गहरा है, इसका आभास एशिया के अनेक देशों की लोककथाओं, नाटक, नृत्य, स्थापत्य कला, मूर्ति कला आदि में रामकथा को मिले स्थान से भी होता है।[4]

उदाहरण के लिए थाइलैंड में रामायण का प्रचलन प्राचीन समय से आज तक रहा है। वहां की नृत्य, नाटिकाओं में रामकथा का मंचन परंपरा–गत संगीत के साथ होता रहा है। रामकथा की यह प्रस्तुति त्योहारों और विवाह समारोहो आदि अवसरों पर आयोजित होती है। इस प्रस्तुति को सभी समुदायों के लोग बड़े उत्साह के साथ देखते हैं।[5]

थाइलैंड के कई ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व के स्थलों पर रामकथा के दृश्य दीवरों या दरवाजों पर या लकड़ी के पैनलों पर नजर आते हैं। इन्डोनेशिया में भारतीय व यहां की स्थानीय संस्कृति का सुन्दर समन्वय हुआ है, जिसकी छाप रीतिरिवाजों, कला साहित्य विभिन्न लोक कलाओं आदि में देखी जा सकती है।

एक समय इंडोनोशिया द्वीप समूह एक ऐसा आधार बन गया था जिसनें दक्षिण पूर्व के अनेक अन्य देशों में भी भारतीय संस्कृति के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इंडोनेशिया में रामकथा पर आधारित लोक नाट्य काफी लोकप्रिय रहा है। कठपुतली का खेल भी रामायण से प्रभावित है।[3] पड़ोसी देश मलेशिया मे तो अरबी लिपि में लिखी गई रामायण की मूल प्रतिलिपि उपलब्ध है। इसमें मूल कथावस्तु से छेड़छाड नहीं की गई है। सच तो यह है कि यह विरासत किसी देश या समुदाय की नही बल्कि पूरी मानवता की है। रामकथा हमें आपस में जोड़ती है और श्रेष्ठ मानव मूल्यों के साथ जीने की शिक्षा देती है।[6]

निष्कर्ष–

लोक जीवन की जैसी सरलतम, नैसार्गिक अनुभूमितयी रामकथा का चित्रण लोक गीतों व लोक कथाओं में मिलाता है वैसा और कहीं नहीं मिलता। यह केवल हरियाणा में ही नहीं अपितु भारत के हर राज्य हर शहर में विद्यमान है, और यह कहना भी गलत नहीं होगा कि राम कथा तो पूरे संसार के लोक साहित्य में अपना विशेष महत्व रखती है। लोक साहित्य में लोक–मानव का हृदय बोलता है। प्रकृति स्वयं गाती गुनगुनाती है, लोक साहित्य में निहित रामकथा सौंदर्य का मूल्यांकन सर्वथा अनुभूतिजन्य है।

1. इंटरनेट
2. रामायण कालीन जनपदीय जीवन का अनुशीलन 1996, पृष्ठ संख्या 1
3. ऋम्बकराज, मखानी की रामायण पर धर्माकूत व्याख्या पृष्ठ–6
4. इंटरनेट
5. इंटरनेट
6. इंटरनेट